Ñfr % fo'kn'kV~[k.Mkxefo/kku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxjth egkjkt

laLdj.k % izFke&2014 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxjth egkjkt

lg;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkselkxjth egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ cz- vkLFkk nhnh] cz- liuk nhnh

la;kstu % cz- lksuw nhnh] cz- fdj.k nhnh] cz- vkjrh nhnh] cz- mek nhnh

lEidZ lw= % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFkku % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZydqekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu % 0141&2319907 ¼?kj½ eks- % 9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- % 9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½ 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykycÙkh pkSd] xka/kh uxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 31@& #- ek=k

''षट्खण्डागम-एक अनमोल कृति''

दोहा– षट्खण्डागम शास्त्र का करना है गुणगान।
यही भावना है विशद, पाएँ सम्यक् ज्ञान।

भाव श्रुत और अर्थपदों के कर्त्ता तीर्थंकर महावीर स्वामी है और श्रुत पर्याय से परिणत श्री गौतम स्वामी द्रव्यक्षुत के कर्त्ता है। इन प्रथम गणधर ने संपूर्ण श्रुतज्ञान लोहाचार्य महामुनि को दिया। इन्होंने श्री जम्बूस्वामी को दिया। परिपाटी के क्रम से ये तीनों ही सकलश्रुत के धारक हुए हैं। क्रम–क्रम से इन तीनों के मोक्ष प्राप्ति के बाद विष्णुनंदि मित्र, अपराजित, गोवर्द्धन और भद्रबाहु ये पाँचों ही आचार्य परिपाटी से चौदह पूर्व के धारी श्रुत केवली हुए हैं।

तदनंतर विशाखाचार्य, प्रोष्टिल आदि ग्यारह महामुनि परिपाटी क्रम से ग्यारह अंग और दश पूर्वो के ज्ञाता तथा शेष चारों पूर्वो के एकदेश ज्ञाता हुए है। इसके बाद नक्षत्राचार्य आदि पाँच आचार्य ग्यारह अंगों और चौदह पूर्वो के एक देश धारी हुए हैं। तदनंतर श्री सुभद्र यशोबाहु और लोहाचार्य ये चारों ही आचार्य सम्पूर्ण आचारांग के धारक और शेष अंग तथा पूर्वो के एकदेश के धारक हुए है। इसके बाद सभी अंग और पूर्वो का एकदेश ज्ञान आचार्य परम्परा से श्री धरसेनाचार्य को प्राप्त हुआ।

सौराष्ट्र–गुजरात–कठियावाड़ देश के गिरिनगर के निकट ऊर्जयंत पर्वत की चन्द्रगुफा में रहने वाले, अष्टांग महानिमित्त के पारगामी प्रवचन वत्सल ये श्री धरसेनाचार्य द्वितीय अग्राणीयीय पूर्व की पंचम वस्तु के चतुर्थ महाकर्म प्रकृति प्राभृत के ज्ञाता थे। इन धरसेनाचार्य को एक समय यह चिंता हुई कि आंगे इन अंग–पूर्व के अंश के ज्ञान का विच्छेद हो जावेगा अत: इस ज्ञान को किन्हीं योग्य शिष्यों को देना चाहिए। उन दिनों दक्षिण देश में वेणाक नदी के निकट जैन साधुओं का पंचवर्षीय महासम्मेलन था। वहाँ पत्र देकर एक ब्रह्मचारी को भेजा। वहाँ उपस्थित आचार्यो ने श्री धरसेनाचार्य द्वारा प्रेषित पत्र को पढ़कर श्री धरसेनाचार्य के अभिप्राय को समझकर अच्छी तरह निर्णय करके दो शिष्यों को भेजा। ये दोनों मुनिराज श्री धरसेन गुरु के पास आये, विधिवत् गुरुवंदना आदि करके अपने आने का हेतु बताया। श्री आचार्य देव ने इनकी यथायोग्यता परीक्षा करके उन्हें

शुभ मुहूर्त में अध्ययन कराना प्रारंभ किया और कुछ ही दिनों में आषाढ़ शुक्ला एकादशी को ग्रन्थ पूर्ण किया तभी व्यन्तर देवों ने आकर इन गुरु की और दोनों शिष्यों मुनियों की भी विशेष पूजा की। इन देवों द्वारा की गई पूजा के अनंतर श्री आचार्य देव ने एक मुनि का पुष्पदंत एवं दूसरे मुनि का 'भूतबलि' नाम घोषित किया। इसके पूर्व इनके नाम 'सुबुद्धि' और 'नरवाहन' थे।

पुनः गुरुदेव ने दोनों को वहाँ से विहार करने का ओदश दिया। गुरु आज्ञा अलंघनीय होती है, ऐसा सोचकर वे वहाँ से प्रस्थान कर अंकलेश्वर गुजरात में पहुँचे, वहाँ वर्षा योग धारण किया अनन्तर श्री पुष्पदन्त मुनि ने बीस प्ररूपणा गर्भित सत्यप्तरूपणा सूत्र 177 सूत्रो को लिखकर अपने शिक्ष्य जिनपालित को पढ़ाकर पुनः उन सूत्रों कोदेकर जिनपालित मुनि को श्रीभूतबलिमहामुनि के पास भेजा। श्री पुष्पदंताचार्य श्री अल्पायु है ऐसा जानकर एवं उन सत्यपुरूपणा सूत्रों को देखकर अति प्रसन्न होकर श्री भूतबलि आचार्य ने ''महाकर्म प्रकृति प्राभृत'' का विच्छेदन हो, इस भावना से आगे ''द्रत्यप्रमाणानुगम को आदि लेकर ग्रन्थ रचना प्रारम्भ कर दी। अतः एव इस खण्ड सिद्धान्त की अपेक्षा श्री पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्य श्री श्रुत के कर्त्ता कहे गये हैं। जब यह षट्खण्डागम ग्रन्थ सूत्र रूप में लिपिबद्ध होकर पूर्ण हुआ तभी चतुर्विध संघ ने मिलकर बहुत ही महोत्सव पूर्वक श्रुत की महापूजा की थी। वह तिथि ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी थी जो कि आज भी जैन समाज में श्रुत पंचमी के नाम से प्रसिद्ध है और सभी जैन बन्धु स्त्री पुरुष भक्तिभाव से शास्त्रो की पूजा करते है। षट्खण्डागम शास्त्र को पालकी में विराजमान कर भव्य शोभायात्रा निकालते है षट्खण्डागम के 78 व्रतोवास होते है इन व्रतों को अष्टमी चतुर्दशी आदि किन्ही भी तिथि में कर सकते है। इस व्रत को सम्पूर्ण क्रिया विधि से विशुद्धि पूर्वक करने वाले श्रुत ज्ञान की वृद्धि करके नियम से आगे भवों में श्रुत केवली पद को प्राप्त होते हैं। परम पूज्य **आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** ने श्रुत की आराधना स्वरूप यह षट्खण्डागम पूजा विधान लिखा है। श्रुत पंचमी पर्व व्रत के उद्यापन या विशेष अवसरों पर यह विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। पुनः गुरुवर के श्री चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक नमोस्तु

संकलन–मुनि विशाल सागर (संघस्थ)

श्री नवदेवता पूजा

(स्थापना)

हे! लोक पूज्य अरिहंत नमन्, हे! कर्म विनाशक सिद्ध नमन्।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे! सर्व साधु है तुम्हें नमन्, हे! जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत! में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता छन्द)

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा
ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

(दोहा) मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल॥

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...

(दोहा) **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

षट्खण्डागम विधान पूजा

स्थापना

तीर्थंकर की दिव्य देशना, कहलाती है जिनवाणी।
तीन लोकवर्ती जीवों की, होती है जो कल्याणी।।
ग्रन्थ रहा प्राचीन श्रेष्ठतम, षट् खण्डागम है जिसका नाम।
पुष्पदन्त अरु भूतबली ने, लिक्खा जिनके चरण प्रणाम।।

दोहाः– षट्खण्डागम ग्रन्थ की, महिमा अगम अपार।
श्रुतज्ञान को प्राप्त कर, पाना भव से पार।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(कुसुमलता छन्द)

क्षीरोदधि का उज्जवल जल ले, निज अन्तर में भक्ति बढ़ाय।
जन्म जरादिक रोग नाश हो, चरणाम्बुज में दिया चढ़ाय।।
षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन में केसर घिस लाए, पावन गंध रही महकाय।
भवाताप के नाश हेतु हम, चढ़ा रहे हैं मन वच काय।।
षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल तन्दुल यह, धोकर लाए हैं मनहार।
अक्षय अक्षय पद पाने को, पूजा करते हम शुभकार।।

षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

शीलेश्वर हे नाथ! आप हो, काम रोग का किए विनाश।
सुरभित पुष्प लिए पूजा को, प्राप्त करें हम शिवपुर वास॥
षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे शुभ नैवेद्य बनाकर, चढ़ा रहे यह भर के थाल।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, जीवों के जो लगा त्रिकाल॥
षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्न दीप में घृत की ज्योती, यहाँ जलाई भली प्रकार।
ज्ञान ज्योति प्रजलाने को हम, करें आरती बारम्बार॥
षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्य: मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

दश विधि धूप सुगन्धित खेते, अग्नि में यह बारम्बार।
दुख देते हैं कर्म अनादि, पूर्ण रूप हो जावें क्षार॥
षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्य: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित ताजे फल ले, पूजा करते हम हर्षाय।
श्रुत पूजा कर मोक्ष महापद, शीघ्र नाथ हम को मिल जाय॥

षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, अर्घ्य बनाया यह शुभकार।
पद अनर्घ पाने हम आये, वन्दन करते बारम्बार।।
षट्खण्डागम शास्त्र की पूजा, करते हैं हम मन वच काय।
श्री जिनेन्द्र की वाणी पाकर, अतिशय मेरा मन हर्षाय।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहाः– दिव्य देशना दिव्य श्रुत, की जानो आधार।
दिव्य ज्ञान पाने 'विशद' देते शांति धार।।

।।शान्तये शान्तिधारा....।।

पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करते यहाँ महान।
शिव वर दायी प्राप्त हो, हमको सम्यक ज्ञान।।

।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

हे जिनवाणी! माता मेरी, भक्तों पर दया प्रदान करो।
हम ज्ञान हीन अज्ञानी हैं, हम सबका अब कल्याण करो।।
श्री ऋषभ देव से महावीर तक, दिव्य ध्वनि खिरती आई।
गणधर जी ने गुंथित करके, इस भव्य जगत में फैलाई।।
महावीर के बाद केवली, दिव्य देशना दिए अनेक।
श्रुत केवली पाँच हुए फिर, उनने ज्ञान दिए अति नेक।।
अंग और पूरव के ज्ञाता, श्रेष्ठ हुए ग्यारह आचार्य।
पूर्वरहित कुछ हीन अंग के, ज्ञायक हुए सतत् आचार्य।।
जैनाचार्यों के द्वारा शुभ, श्रुत का निर्झर झरा अपार।
मोक्षमार्ग का भव्य जनों को, ज्ञान मिला है अपरम्पार।।

काल दोष के कारण लेकिन, जिनवाणी का ह्रास हुआ।
श्री धरसेनाचार्य गुरु के, मन में कुछ अहसास हुआ।।
द्वादशांग का लोप हुआ तो, क्या होगा संसार का।
अनेकांत का क्या होगा औ, क्या निश्चय व्यवहार का।।
लेखन हो जाए श्रुत का तो, अमर होएगी जिनवाणी।
श्रीधर सेनाचार्य ने मन में, लेखन करने की ठानी।।
अर्हद्बली आचार्य संघ से, दो मुनियों को बुलवाया।
पूर्ण परीक्षित करके उनसे, जिनवाणी को लिखवाया।।
लेखन हुआ ताड़पत्रों पर, षट्खण्डागम ग्रन्थ का।
अजर अमर हो गया सुयश, यह वीतराग निर्ग्रन्थ का।।
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस को, स्वप्न पूर्ण साकार हुआ।
घर-घर मंगल वाद्य बजे अरु, नगर-नगर जयकार हुआ।।
धवला टीका वीरसेन कृत, सहस बहत्तर श्लोक प्रमाण।
जय धवला जिनसेन वीर कृत, साठ हजार श्लोक प्रमाण।।
महाधवल है देवसेन कृत, हैं श्लोक चालीस हजार।
विजय धवल अतिशय धवल का, प्राप्त नहीं श्लोक विचार।।
क्रमशः ऋषि मुनियों के द्वारा, ग्रन्थ लिखे कई ज्ञान प्रधान।
चारों ही अनुयोग के द्वारा, दिया जगत को करुणा दान।।
श्रुत पारंगत विद्वत श्रेष्ठी, सबने श्रुत का किया विकास।
आगे भी सब ऋषि मुनि अरु, विद्वत श्रेष्ठी करें प्रकाश।।
जिनवाणी की भक्ति करें अरु जिनश्रुत की महिमा गाएँ।
सम्यक्दर्शन की निधि पाकर, सम्यग्ज्ञानी बन जाएँ।।
रत्नत्रय के आलम्बन से, वसु कर्मों का नाश करें।
मोक्ष मार्ग पर गमन करें फिर, सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञान षट्खण्डागम ग्रंथेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिनश्रुत की पूजा करूँ, जिनश्रुत है गुणवन्त।
जिनश्रुत मेरे उर बसे, नमन अनन्तानन्त।।

(पुष्पाजलिं क्षिपेत्)

षट्खण्डागम विधान अर्घ्यावली

प्रथम खण्ड के 9 अर्घ्य

दोहा– जीवस्थान शुभ खण्ड के, चढ़ा रहे है अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाना सुपद अनर्घ्य॥

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।)

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-सप्तसप्तत्यधिकशत-सूत्रसमन्वित-सत्प्ररूपणानामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विनवत्यधिकशत सूत्रसमन्वितः-द्रव्यप्रमाणानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विनवतिसूत्र समन्वित-क्षेत्रानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-पंचाशीत्यधिकशत सूत्रसमन्वित-स्पर्शनानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिशदधिकत्रिशत सूत्रसमन्वित-कालानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-सप्तनवत्यधिकत्रिशत सूत्रसमन्वित-अन्तरानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-त्रिनवति सूत्रसमन्वित-भावानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-द्वयशीत्यधिकत्रिशत सूत्रसमन्वितः अल्पबहुत्वानुगमनामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य प्रथमखण्डान्तर्गत-पञ्चशाधिकपञ्चत सूत्रसमन्वित-नवचूलिकानामजीवस्थानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जीव स्थान खण्ड है पहला, छह पुस्तक की टीका इसमें।
दो हजार तीन सौ पचहत्तर, सूत्रों का सार भरा जिसमें।।
अनुयोग आठ नव चूलिकाओं में, सत्प्ररूपणा आदि कथन।
प्राप्त करें हम ज्ञान विशद, अतएव करें श्रुत का अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं अष्ट अनुयोग नव चूलिका समन्वित जीव स्थान नाम प्रथम खण्ड जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय खण्ड के 13 अर्घ्य

दोहा– क्षुद्र बन्ध द्वितिय रहा, पावन श्रुत का भाग।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, रख श्रुत में अनुराग।।

(इति द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।)

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-त्रिचत्वारिंशत् सूत्रसमन्वित-बन्धकसत्त्वप्ररूपणानामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकनवति सूत्रसमन्वित-स्वामित्वानुगमनामक्षुद्रकंबधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षोडशोत्तरद्विशत सूत्रसमन्वित-एकजीवपेक्षाकालनुगमानमक्षद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकपंचाशदधिकशत सूत्रसमन्वित-एकजीवापेक्षान्तरानुगमनाम-क्षुद्रकंबधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-त्रयोविंशति सूत्रसमन्वित-नानाजीवपेक्षाभंगविचयानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकसप्तत्यधिकशत सूत्रसमन्वित-क्षेत्रानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-चतुर्विंशत्यधिकशत सूत्रसमन्वित-स्पर्शानुगमनामक्षुद्रकबंधोभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीत्यधिकद्विशत सूत्रसमन्वित- स्पर्शनानुगमनामक्षुकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-पंचपंचाशत सूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षाकालनुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टषष्टि सूत्रसमन्वित-नानाजीवापेक्षान्तरानुगमनामक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-अष्टाशीति सूत्रसमन्वित-भागाभागानुगमनाक्षुद्रकबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-षडुत्तरद्विशत सूत्रसमन्वित-अल्पबहुत्वानुगमनामक्षुद्रकंबधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य द्वितीयखण्डान्तर्गत-एकोनाशीति सूत्रसमन्वित-महादण्डकनामक्षुद्रबंधेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

द्वितिय खण्ड षट्खण्डागम का, क्षुद्रकबन्ध कहलाया है।
पन्द्रह सौ चौरानवे सूत्र युत, ग्रन्थ श्रेष्ठ यह गाया है॥
सप्तम पुस्तक में निबद्ध है, बन्ध के प्रकरण सहित महान।
ज्ञानावरण कर्म नश जाए, करते भाव सहित गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं कर्मबंधप्रकरणसमन्वितक्षुद्रकबंधनाम द्वितीय खण्ड जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय खण्ड के 15 अर्घ्य

दोहा– बन्ध स्वामित्व विजय सुश्रुत, जग में रहा महान।
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हम गुणगान॥

(इति तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।)

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत सूत्रसमन्वित-गुणस्थानसंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकानेषष्टिसूत्र समन्वित-गतिमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचत्रिंशत्सूत्र समन्वित-इन्द्रियमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्र समन्वित-कायमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनत्रिंशत्सूत्र समन्वित-योगमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनवंशितिसूत्र समन्वित-वेदमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-एकोनविंशतिसूत्र समन्वित-कषायमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टादशसूत्र समन्वित-ज्ञानमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-अष्टाविंशतिसूत्र समन्वित-संयममार्गणाासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-पंचसूत्र समन्वित-दर्शनमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-सप्तदशसूत्र समन्वित-लेश्यामार्गणाणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्र समन्वित:भव्यत्वमार्गणाासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशत्सूत्र समन्वित:सम्यक्त्वमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्र समन्वित-संज्ञिमाग्रणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य तृतीयखण्डान्तर्गत-द्विसूत्र समन्विताहारमार्गणासंबंधिबंधस्वामित्वविचयेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

तृतिय बन्ध स्वामित्व विचय शुभ, अष्टम पुस्तक में गाया।
त्रय शत चौबिस सूत्रों द्वारा, जिन सिद्धान्त भी बतलाया।।
तीन योग से जैनागम का, करते भाव सहित अध्ययन।
कर्म बन्ध से मुक्ती पाते, अर्घ्य चढ़ा करते पूजन।।3।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधादिसिद्धान्तकथनसमन्वितबंधस्वामित्वविचयनामतृतीयखण्ड जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ खण्ड के 17 अर्घ्य

दोहा– चतुर्थ वेदना खण्ड की, अर्चा है शुभकार।
पुष्पाञ्जलि करके करे, वन्दन बारम्बार।।

(इति चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।)

कृतिअनुयोगद्वार का 1 अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-णमोजिणाणमित्यादिगणधरमंत्रयुत सप्तभेदसहित षट्सप्ततिसूत्रसमन्वित कृति अनुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदना के 16 भेद के 16 अर्घ्य

2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिसूत्र समन्वित-वेदनानिक्षेपानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतुस्सूत्र समन्वित-वेदनानिक्षेपानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चतु:सूत्र समन्वित-वेदनानिक्षेपानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-चूलिकासमेतत्रयोदशोत्तरद्विशतसूत्रसमन्वित:-वेदनाद्रव्य-विधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-नवनवतिसूत्र समन्वित-वेदनाक्षेत्रविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वयचूलिकासमेत-एकोनाशीत्यधिक द्विशतसूत्रसमन्वित: वेदनाकालविधानानुयोगद्वारनाम वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिचूलिकासमेत-

चतुर्दशोत्तरत्रिशत्सूत्र समन्वित- वेदनाभाव-विधानुयोग-द्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-पंचदशसूत्र समन्वित-वेदनास्वामित्वविधानानुयोगद्वार-नामवेदना-खण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-अष्टापंचाशत्सूत्र संमन्वित-वेदनावेदनाविधानानुयोगद्वारनाम-वेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-द्वादशसूत्र समन्वित-वेदनागतिविधानानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकादशसूत्र समन्वित-वेदनानन्तरविधानानुयोद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-विंशत्युत्तरत्रिशतसूत्र समन्वित-वेदनापरिमाणविधानानुयोगद्वार नामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-त्रिपंचाशत्सूत्र समन्वित-वेदनापरिमाणविधानानुयोगद्वारनामवेदना-खण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-एकविंशतिसूत्र समन्वित-वेदनाभागाभागविधानानुयोग-द्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य चतुर्थखण्डान्तर्गत-सप्तविशतिसूत्र समन्वित-वेदनात्पबहुत्वानुयोगद्वारनामवेदनाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चतुर्थ वेदना खण्ड कहा शुभ, पुस्तक चार में है वर्णन।
नौ से बारह तक चारों में, पन्द्रह सौ चौदह सूत्र कथन।।

इन शास्त्रों की पूजा करके, कर्म असाता होय विनाश।
सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो जाता, मन की होती पूरी आस।।4।।

ॐ ह्रीं ऋद्ध्यादिवर्णन समन्वित वेदना खण्ड नाम चतुर्थखण्ड जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचवें खण्ड के 22 अर्घ्य

दोहा– खण्ड वर्गणा श्रेष्ठ शुभ, पञ्चम है सुखधाम।
पुष्पाञ्जलि श्रुत पद करें, करके विशद प्रणाम।।

(इति पंचम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।)

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-त्रयस्त्रिंशत्सूत्र समन्वित-स्पर्शानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-एकत्रिंशत्सूत्र समन्वित-कर्मानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-द्विचत्वारिंशदधिकशतसूत्रसमन्वित-प्रकृत्यनुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-चूलिकायुत बंध-बंधक-बंधनीयसमेत-सप्तनवत्यधिक-सप्तशतसूत्र समन्वित-बंधनानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-विंशतिसूत्र समन्वित-निंबधानानुयोगद्वारनामवर्गणा-खण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-प्रक्रमानुयोगद्वारनाम वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-उपक्रमानुयोगद्वारनाम वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–उदयानुयोगद्वारनाम वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–मोक्षानुयोगद्वारनाम वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–संक्रमानुयोगद्वारनाम वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–लेश्यानुयोगद्वारनाम वर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–लेश्याकर्मानुयोगद्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

13. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–लेश्यापरिणामानुयोग द्वारनामर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–सातासातानुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–दीर्घह्रस्वानुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–भवधारणीयानुयोद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–पुद्गलात्तानुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–निधत्तानिधत्तानुयोग द्वारनामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

19. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत– निकाचिता–निकाचितानुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

20. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–कर्मस्थित्यनुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

21. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत–पश्चिमस्कन्धानुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

22. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य पंचमखण्डान्तर्गत-अल्पबहुत्वानुयोगद्वार नामवर्गणाखण्डेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

खण्ड वर्गणा पञ्चम गाया, षट्खण्डागम का जो शुभकार।
एक सौ तेइस सूत्र तेरह से, सोलह पुस्तक तक मनहार॥
धरसेन सूरी गिरि से गंगा, मानो बहकर के आई।
पुष्पदन्त अरु भूतबली ने, की रचना जिसकी भाई॥5॥

ॐ ह्रीं गणितादि नानाविषयसमन्वित वर्गणाखण्ड नाम पंचमखण्ड जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठे महाबंध नाम षट्खण्डागम का अर्घ्यं

दोहा– छठा खण्ड महाबन्ध का, सभी पूजते जीव।
पुष्पाञ्जलि कर श्रेष्ठ शुभ, पाते पुण्य अतीव॥

(इति षष्ठ्म वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।)

1. ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागमस्य षष्ठखण्डान्तर्गत-चत्वारिंशत्सप्तसूत्र समन्वित-महाबन्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

षट् खण्डागम छठे खण्ड में, महाबन्ध का नाम रहा।
महाबन्ध टीका उस पर है, वीर सेन जी ने इसे रचा।
इस प्रकार षट् खण्डागम में, दिव्य ध्वनि का अंश रहा।
पूज रहे हम ग्रन्थ राज को, मोक्ष प्रकाशक दीप कहा॥6॥

ॐ ह्रीं महाधवलटीका समन्वित महाबंधनाम षष्ठ्मखण्ड जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कषाय प्राभृत ग्रंथ का मंत्र

दोहा– कषाय प्राभृत शुभ ग्रन्थ है, पढ़के हो श्रुतज्ञान।
पुष्पाञ्जलि कर जीव शुभ, करें आत्म कल्याण॥

(इति सप्तम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।)

1. ॐ ह्रीं अर्हं चूर्णिसूत्रसमन्वितत्र्यशीतिगाथासूत्रस्वरूप-कषायप्राभृतेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

गुणधर भट्टारक विरचित है, कषाय प्राभृत ग्रन्थ महान।
जय धवला टीका है सोलह, पुस्तक में उपलब्ध प्रधान।
द्वादशांग का सार पूर्ण सब, इन ग्रन्थों में हम पाते।
अन्य और कुछ सार नहीं है, अतः शास्त्र पूजे जाते।।7।।

ॐ ह्रीं जयधवला टीकासमन्वित कषायप्राभृत जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

पुष्पदन्त अरु भूतबली कृत, षट्खण्डागम महति महान।
नौ हजार सूत्रों से संयुत, वर्तमान का ग्रन्थ प्रधान।।
बानवे सहस्त्र श्लोक प्रमाण यह, टीका अनुपम बतलाई।
वीरसेन स्वामी कृत धवला, टीका 'विशद' पूज्य गाई।।8।।

ॐ ह्रीं धवलामहाधवला टीकासमन्वित षट्खंडागम जिनागमाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शान्यते शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत)

जाप्य–ॐ ह्रीं सिद्धान्त ज्ञान प्राप्तये षट्खण्डागम जिनागमाय नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं षट्खण्डागम जिनागमेभ्यो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– **ह्रास हुआ श्रुत ज्ञान का, आते पञ्चम काल।**
षट् खण्डागम ग्रन्थ की, गाते हम जयमाल।।

(आल्हा छन्द)

महावीर की दिव्य देशना, गौतम गणधर ने पाई।
अनाक्षरी होकर भी भाई, द्वादशांग मय कहलाई।।
दिव्य ज्ञान गौतम स्वामी का, लोहाचार्य ऋषी पाए।
लोहाचार्य से ज्ञान प्राप्त कर, जम्बू स्वामी हर्षाए।।

तीनो यह अनुबद्ध केवली, पञ्चम काल में हुए महान।
चौदह पूर्व के धारी मुनिवर, श्रुत केवली हुए प्रधान॥
संत विशाखाचार्य आदि दश, पूर्व अंग ग्यारह के धारी।
ग्यारह मुनिवर हुए जहाँ में, करूणाकर मंगलकारी॥
चार पूर्व का देश ज्ञान शुभ, जग जीवों को आप दिए।
पाँच नक्षत्राचार्य आदि मुनि, देश अंश में स्वयं लिए॥
सुभद्र आदि फिर चार मुनीश्वर, पाए अंग अंश का ज्ञान।
यही ज्ञान धरसेनादिक ने, गुरु से पाया सह सम्मान॥
श्री धरसेनाचार्य को अपनी, हुआ अल्प आयु का भान।
मुनि नर वाहन और सुबुद्धी को, तब गुरु सिखाए ज्ञान॥
अंकलेश्वर गुजरात प्रान्त में, किया आपने चातुर्मास।
लिपीबद्ध करवाया आगम, हुई पूर्ण तब गुरु की आस॥
मुनि सुबुद्धि ने सत् प्ररूपणा, की रचना की मंगलकार।
मुनि नर वाहन ने पाकर जो, किया उसी का ही विस्तार॥
द्रव्य प्रमाणानुगम आदिक, छह खण्डों में रचा महान।
छह हजार सूत्रों की रचना, करके किया विशद गुणगान॥
ज्येष्ठ शुक्ल की पाँचें तिथि को, पूर्ण हुआ था लेखन कार्य।
संघ चतुर्विध ने अर्चा की, धन्य हुए वह मुनि आचार्य।
मुनि सुबुद्धि की दन्त पंक्ति लख, पुष्प दन्त सुर नाम दिए।
नरवाहन मुनि भूत सुरों से, भूतबली शुभ नाम लिए॥
पुष्पदन्त अरु भूतबली मुनि, इस प्रकार से कहलाए।
षट्खण्ड्‌ागम के जय धारी, चक्रवर्ति पदवी पाए॥
त्रय खण्डों पर टीका कीन्हे, कुन्द-कुन्द परिकर्म कहा।
शाम कुण्ड द्वितिय टीका की, पद्धति जिसका नाम रहा॥
तुम्बु लूट टीका जो कीन्हे, रहा पंजिका जिसका नाम।
समन्त भद्र जी चौथी टीका, लिक्खी जिनके चरण प्रणाम॥

पप्प देव ने लिखा है जिसको व्याख्या प्रज्ञप्ती जानो।
धवलादिक टीका के कर्ता, वीर सेन मुनिवर मानो॥
इन छह टीकाओं में धवला, मात्र आज उपलब्ध रही।
बात शेष टीकाओं की बश, किन्ही शास्त्र में आज नहीं॥
शांति सागराचार्य हुए हैं, सदी बीसवी में मुनिराज।
ताम्र पत्र पर शास्त्र लिखाए, करवाए भाषा अनुवाद॥

दोहाः– षट खण्ड्ागम ग्रन्थ को, वन्दन करते आज।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, पाने शिव स्वराज॥

ॐ ह्रीं षट्खण्डागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो जयमाला सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् खण्डागम शास्त्र शुभ, पढ़ें सुनें जो जीव।
'विशद' ज्ञान पाएँ स्वयं, पावें पुण्य अतीव॥

।।इत्याशीर्वाद।।

प्रशस्ति

¬ue%fl)sH;%Jhewyla?ksdqUndqUnkEuk;scykRdkjx.kslsuxPNsUrh la?kL;ijEijk;ka.Jhvkfnlkxjkpk;ZtkrkLrr~f'k";%JhegkohjdhfrZ vkpk;ZtkrkLrr~f'k";k%Jhfoeylkxjkpk;kZtkrkLrrf'k";Jh Hkjrlkxjkpk;ZJhfojkxlkxjkpk;kZtkrkLrr~f'k";vkpk;Z fo'knlkxjkpk;ZtEcw}hisHkjr{ks=ksvk;Z[k.MsHkkjrns'ksgfj;k.kizkUrs jsokM+h]tSuiqjhukeuxjsfLFkr1008JhpUnziziHkqftupSR;ky;eè;s voljsfudkZ.klEor~2540fo-la-2071T;s'Bekls'kqDyki{ksiapeh lkseoklljs'kV~[k.Mkxe%foèkkujpuklekfIrbfr'kqHkaHkw;kr~A

जिनवाणी की आरती

(तर्ज : हो बाबा हम सब उतारें तेरी आरती...)

आज करें हम जिनवाणी की, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घृत के लाए, हे माँ तेरे द्वार॥
हो माता–हम सब उतारे तेरी आरती...
तीर्थंकर की दिव्य देशना, ॐकारमय प्यारी।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, जन-जन की मनहारी॥1॥
हो माता...
मिथ्या मोह नशानेवाली, है जिनवाणी माता।
ध्याने वाले जग जीवों को, देने वाली साता॥2॥
हो माता...
गणधर द्वारा झेली जाती, तीर्थंकर की वाणी।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाली, सर्व जगत कल्याणी॥3॥
हो माता...
जो जिनवाणी माँ को ध्याते, वे सुख शांति पाते।
पूजा अर्चा करने वाले, केवल ज्ञान जगाते॥4॥
हो माता...
महिमा सुनकर के हे माता, द्वार आपके आये।
'विशद' भाव से आरती करके, सादर शीश झुकाए॥5॥
हो माता...
सुखशांति सौभाग्य बढ़ाकर, मुक्ती राह दिखाओ।
देकर के आशीष हे माता, शिवपुर में पहुँचाओ॥6॥
हो माता...

जिनवाणी चालीसा

दोहा- अर्हत सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय जिन संत।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, जिन श्रुत कहा अनन्त॥
दिव्य ध्वनि जिनदेव की, सरस्वती है नाम।
चालीसा लिखते यहाँ, करके विशद प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय सरस्वती जिनवाणी, तुम हो जन-जन की कल्याणी।
अनुपम भारती नाम कहाया, द्वितिय सरस्वती शुभ गाया॥
तृतिय नाम शारदा जानो, चौथा हंस गामिनी मानों।
पञ्चम विदुषां माता गाई, वागीश्वरि छठवाँ शुभ पाई॥
सप्तम नाम कुमारी गाया, अष्टम ब्रह्मचारिणी पाया।
जगत माता नौमा शुभ जानो, दशम नाम ब्राह्मिणी पहिचानो॥
ब्रह्माणी ग्यारहवा भाई, बारहवा वरदा सुखदायी।
नाम तेरहवां वाणी गाया, चौदहवाँ भाषा कहलाया॥
पन्द्रहवाँ श्रुत देवी जानो, सोलहवाँ गौरी शुभ मानो।
सोलह नाम युक्त जिन माता, सबके मन की हरे असाता॥
द्वादशांग युत वाणी गाई, चौदह पूर्व युक्त बतलाई।
आचारांग प्रथम कहलाया, दूजा सूत्र कृतांग बताया॥
स्थानांग तीसरा जानो, चौथा समवायांग बखानो।
व्याख्या प्रज्ञप्ति है पंचम, श्रोतृकथा शुभ अंग है षष्टम॥
उपासकाध्ययन अंग सातवाँ, अन्तःकृद्दश रहा आठवाँ।
नवम अनुत्तर दशांग बताया, दशम प्रश्न व्याकरण कहाया॥
सूत्र विपांग ग्यारहवा जानो, दृष्टिवाद बारहवा मानो।
पाँच भेद इसके बतलाए, पहला शुभ परिकर्म कहाए॥
सूत्र दूसरा भेद बखाना, भेद पूर्वगत तृतिय माना।
चौथा प्रथमानुयोग कहाया, पंचम भेद चूलिका गाया॥
भेद पूर्वगत के शुभकारी, चौदह होते मंगलकारी।

पहला उत्पाद पूर्व बखाना, पूर्व अग्राणीय द्वितिय मानो॥
तीजा वीर्य प्रवाद कहाया, अस्तिनास्ति प्रवाद फिर गाया।
पञ्चम ज्ञान प्रवाद बखाना, सत्य प्रवाद छट्टा शुभ माना॥
सप्तम आत्म प्रवाद है भाई, कर्म प्रवाद अष्टम सुखदायी।
नौवा प्रत्याख्यान बताया, विद्यानुप्रवाद दशम कहलाया॥
कल्याणवाद ग्यारहवा जानो, प्राणावाय बारहवा मानो।
क्रिया विशाल तेरहवा भाई, लोक बिन्दु सार अन्तिम सुखदायी॥
ऋषभादिक चौबिस जिन गाये, वीर प्रभु अन्तिम कहलाए।
ॐकारमय श्री जिनवाणी, तीन लोक में है कल्याणी॥
गौतम गणधर ने उच्चारी, भवि जीवों को मंगलकारी।
तीन हुए अनुबद्ध केवली, पाँच हुए फिर श्रुत केवली॥
फिर आचार्यों ने वह पाई, परम्परा यह चलती आई।
कलीकाल पञ्चम युग आया, अंग पूर्व का ज्ञान भुलाया॥
ज्ञाता अंगांश के शुभ भाई, धरसेन स्वामी बने सहाई।
भूतबली पुष्पदन्त बुलाए, षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखाए॥
धवलादिक टीका शुभकारी, श्रुत का साधन बना हमारी।
शुभ अनुयोग चार बतलाए, चतुर्गति से मुक्ति दिलाए॥
प्रथमानुयोग प्रथम कहलाया, द्वितिय करुणानुयोग बताया।
चरणानुयोग तीसरा जानो, द्रव्यानुयोग चौथा पहिचानो॥
अनेकांतमय अमृतवाणी, स्याद्वादमय श्री जिनवाणी।
जिसमें हम अवगाहन पाएँ, अपना जीवन सफल बनाएँ॥
सम्यक् श्रुत पा ध्यान लगाएँ, अपना केवल ज्ञान जगाएँ।
विशद भावना है यह मेरी, मिट जाए भव भव की फेरी॥

दोहा– श्रद्धा भक्ति से पढ़े, चालीसा शुभकार।
लौकिक आध्यात्मिक सभी, पावे ज्ञान अपार॥
चालीसा जो भी पढ़े , बने श्रेष्ठ विद्वान।
''विशद'' भाव से यह किया, आगम का गुणगान॥

ॐ ह्रीं अर्हंन् मुखोद्भूत जिनवाणी सरस्वती दैव्ये: नम:।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः–इह विधि मंगल आरती कीजे....)

बाजे छम-छम-छम छमा छम बाजे घूंघरू-2
हाथों में दीपक लेकर आरती करूँ-2॥ टेक॥

कुपी ग्राम में जन्म लिया हैं, इन्दर माँ को धन्य किया हैं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(1) बाजे छम-छम-छम...

गुरुवर आप है बालब्रह्मचारी, भरी जवानी में दीक्षाधारी
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(2) बाजे छम-छम-छम...

विराग सागर जी से दीक्षा पाई, भरत सागर जी के तुम अनुयायीं
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(3) बाजे छम-छम-छम...

विशद सागर जी गुरुवर हमारे, छत्तीस मूलगुणों को धारे
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(4) बाजे छम-छम-छम...

संघ सहित गुरु आप पधारे, हम सबके यहाँ मन हर्षायें
तो इसलिये, इसलिये गुरुवर तेरी आरती करूँ-2। हाथों में...
(5) बाजे छम-छम-छम...

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शान्ति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शान्ति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. विशद पञ्चागम संग्रह
113. जिन गुरु भक्ती संग्रह
114. धर्म की दस लहरें
115. स्तुति स्तोत्र संग्रह
116. विराग वंदन
117. बिन खिले मुरझा गए
118. जिंदगी क्या है
119. धर्म प्रवाह
120. भक्ती के फूल
121. विशद श्रमण चर्या
122. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
123. इष्टोपदेश चौपाई
124. द्रव्य संग्रह चौपाई
125. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
126. समाधितन्त्र चौपाई
127. शुभषितरत्नावली
128. संस्कार विज्ञान
129. बाल विज्ञान भाग-3
130. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
131. विशद स्तोत्र संग्रह
132. भगवती आराधना
133. चिंतवन सरोवर भाग-1
134. चिंतवन सरोवर भाग-2
135. जीवन की मन:स्थितियाँ
136. आराध्य अर्चना
137. आराधना के सुमन
138. मूक उपदेश भाग-1
139. मूक उपदेश भाग-2
140. विशद प्रवचन पर्व
141. विशद ज्ञान ज्योति
142. जरा सोचो तो
143. विशद भक्ती पीयूष
144. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
145. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह